साहित्य से सिनेमा माध्यम में रूपांतरण की प्रक्रिया और समस्याएं

(घटश्राद्ध-दीक्षा और दामुल-दामुल के विशेष संदर्भ में

SAHITYA SE CINEMA MADHYAM MEN ROOPANTARAN KI PRAKRIYA AUR SAMASYAYEN (GHATSHRADDHA-DIKSHA AUR DAMUL-DAMUL KE VISHESH SANDARBHA MEN)

एम. फिल. तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र : **2015-16**

शोध निर्देशक
डॉ. सुनील कुमार
सहायक प्रोफ़ेसर

शोधार्थी
ज्ञान चन्द पाल
पंजीयन सं.- 2015/02/205/001

ज्ञान शांति मैत्री

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र), भारत

घोषणा पत्र/प्रमाण पत्र

मैं **ज्ञान चन्द्र पाल** घोषणा करता हूँ कि मैंने हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में सत्र: 2015-16 के अंतर्गत एम. फिल. तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु **'साहित्य से सिनेमा माध्यम में रूपांतरण की प्रक्रिया और समस्याएं (घटश्राद्ध-दीक्षा और दामुल-दामुल के विशेष संदर्भ में)'** विषय पर **डॉ. सुनील कुमार** के नियमित शोध निर्देशन में अपना लघु शोध-प्रबंध पूर्ण किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरा मौलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

शोधार्थी

ज्ञान चन्द्र पाल

एम. फ़िल. तुलनात्मक साहित्य

नामांकन संख्या: 2015/02/105/001

प्रमाणित किया जाता है कि **ज्ञान चन्द्र पाल** ने **'साहित्य से सिनेमा माध्यम में रूपांतरण की प्रक्रिया और समस्याएं (घटश्राद्ध-दीक्षा और दामुल-दामुल के विशेष संदर्भ में)'** विषय पर एम. फ़िल. उपाधि हेतु लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध उनके द्वारा संग्रहीत किए गए तत्वों पर आधारित है। अतः मैं **ज्ञान चन्द्र पाल** के लघु शोध प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की अनुशंसा करता हूँ।

डॉ. सुनील कुमार

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

ज्ञान चन्द्र पाल के द्वारा प्रस्तुत एम. फ़िल. लघु शोध प्रबंध को मूल्यांकन हेतु अग्रेषित किया जाता है।

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

अध्यक्ष, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

भूमिका

माध्यम रूपांतरण की प्रक्रिया को समझना जितना कठिन है, इसमें लग जाने पर यह उतनी ही दिलचस्प भी है। संभवतः यही कारण रहा है, जिसने मुझे साहित्यिक कृतियों के फिल्म रूपांतरण से संबंधित शोध विषय को चयन करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान मुझे अनेक फिल्मी हस्तियों के बारे में न केवल गहराई से जानने-समझने का अवसर मिला, बल्कि उनके खेमे, फिल्म निर्माण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा वह लगन, जो उन्हें फिल्म बनाने को बाध्य करती है, जानने को मिला। माध्यम रूपांतरण की प्रक्रिया को समझने के दौरान कई बार ऐसा अनुभव हुआ कि वास्तव में ऐसे लोग, जो इस कार्य को अंजाम दे रहे हैं, वे केवल कठिन कार्य ही नहीं कर रहे हैं, अपितु उनके द्वारा विशेषकर साहित्य से अछूते व्यक्तियों के लिए बहुत ही श्रेष्ठ कार्य किया जा रहा है।

भारत में साहित्यिक कृतियों के फिल्म रूपांतरण का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना पुराना यहाँ के सिनेमा का इतिहास है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को चार अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। इसके प्रथम अध्याय 'साहित्य और सिनेमा के अंतर्संबंध' में साहित्य और सिनेमा के बीच के संबंध को बारीकी से समझने का प्रयास किया गया है। प्रथम अध्याय को तीन उप अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसका प्रथम उप अध्याय 'संभावना और स्वरूप' है, जिसमें साहित्य और सिनेमा के संबंधों को गंभीरतापूर्वक समझते हुए इसके भविष्य की संभावना और वर्तमान स्वरूप पर विचार किया गया है। इसमें साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों का आकलन उनकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया है। द्वितीय उप अध्याय 'विशेषताएँ और सीमाएँ है, जिसमें दोनों विधाओं की अपनी विशेषताएँ और उनकी सीमाओं को रेखांकित किया गया है। इसमें साहित्यिक फिल्मों की उपयोगिता को विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है। तृतीय उप अध्याय में साहित्य की रचना और फिल्म की निर्माण प्रक्रियाओं को

तुलनात्मक दृष्टि से समझा गया है। इसमें एक साहित्यकार द्वारा साहित्य सृजन के मानसिक दबाव तथा सामाजिक प्रतिबद्धता और फिल्मकार के फिल्म निर्माण-प्रक्रिया तथा उसमें दर्शकों का विशेष ध्यान देने की प्रतिबद्धता को उल्लेखित किया गया है।

प्रस्तुत शोध का दूसरा अध्याय 'माध्यम रूपांतरण की सैद्धांतिकी और उसके व्यावहारिक पक्ष' है। इस अध्याय को दो उप अध्यायों में बांटा गया है। इसमें साहित्यिक रचनाओं के फिल्म रूपांतरण की सैद्धांतिकी तथा उसके व्यावहारिक पहलुओं की परख की गई है। 'सैद्धांतिक पहलू' में साहित्य से सिनेमा माध्यम में रूपांतरण के तकनीकी पहलू का सूक्ष्मता से अध्ययन किया गया है। इस दौरान रचना की ऐतिहासिकता, फिल्म की लंबाई की पाबंदी, सामाजिक सोद्देश्यता, पात्रों की संख्या, उनकी संस्कृति तथा तात्कालिक प्रासंगिकता आदि पर विचार किया गया है। माध्यम रूपांतरण के 'व्यावहारिक पक्ष' के अंतर्गत सही पात्रों का चयन, दृश्यों की यथार्थता, इतिहासबोध तथा संवादों की स्पष्टता पर ध्यान आकृष्ट किया गया है।

तृतीय अध्याय 'माध्यम रूपांतरण की चुनौतियाँ' नाम से है। इसमें साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों का उनकी सफलता, असफलता और लेखक-निर्देशक के विवादों के कारण की खोज की गई है। इस अध्याय को तीन उप अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसका प्रथम उप अध्याय 'रचना की मूल संवेदना का प्रश्न' नाम से अभिहित किया गया है। इसमें कहानी का फिल्म परिवर्तन के लिए किए गए बदलावों और उस स्थिति में फिल्म में कहानी की संरक्षित संवेदना का परीक्षण किया गया है। इस उप अध्याय में साहित्यिक कृति पर फिल्म निर्माण को प्रतिबद्ध निर्देशक का रूपांतरण के समय रचना के साथ किए गए न्याय तथा रचना की संवेदनात्मक समझ का सूक्ष्म अंवेक्षण किया गया है। इसका दूसरा उप अध्याय 'साहित्यिक भाषा बनाम फिल्मी भाषा' है। इसमें कहानी की भाषा से फिल्म की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन उसके पात्र, परिवेश और देशकाल-वातावरण के आधार पर किया गया है। तृतीय

अध्याय का तीसरा और अंतिम उप अध्याय 'बाजार का दबाव' है। इसमें साहित्यिक कृतियों का फिल्म रूपांतरण के समय व्यावसायिकता हेतु किए गए परिवर्तन की मजबूरी तथा उसके कारण रचना की मूल संवेदना पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध का चतुर्थ और मुख्य अध्याय 'माध्यम रूपांतरण की प्रक्रिया के विविध आयाम' है। इस अध्याय को पाँच उप अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। इसका प्रथम उप अध्याय 'कथा से पटकथा तक' है, जिसमें कहानी से फिल्म में किए गए परिवर्तनों का इसकी प्रभावकता में वृद्धि या कमी के आधार पर परखने की कोशिश की गई है। इसमें कहानी तथा फिल्म के कथानक और दृश्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस उप अध्याय में फिल्म में प्रदर्शित दृश्यों को कहानी के दृश्यों से तुलना कर उसकी प्रासंगिकता के आधार पर परखा गया है। इसका दूसरा उप अध्याय 'पात्र एवं चरित्र-चित्रण' के नाम से है। इसमें कहानी तथा फिल्म के पात्रों का कहानी तथा फिल्म की प्रभावोत्पादकता के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। 'पात्र एवं चरित्र चित्रण' के अंतर्गत पात्रों की प्रासंगिकता और व्यर्थता का सूक्ष्म निरूपण प्रस्तुत किया गया है। अगला उप अध्याय 'संवाद' के नाम से है, जिसमें फिल्म के संवादों का कहानी की घटना से तुलना तथा दर्शकों में संप्रेषणीयता के आधार पर आकलन किया गया है। इसमें संवाद का आकलन उच्चारण की स्पष्टता, वाक्यों की सरलता तथा स्वर में उतार-चढ़ाव के आधार पर किया गया है। इसका चौथा उप अध्याय 'वातावरण' नाम से है। इसमें कहानी के वातावरण से फिल्म के वातावरण की तुलना पात्रों के रहन-सहन, पहनावा, बोलचाल, खान-पान तथा उनकी मान्यताओं के आधार पर की गई है। चतुर्थ अध्याय का पाँचवाँ और अंतिम उप अध्याय 'प्रतीक एवं बिंब' नाम से है। इसमें कहानी के बिंबों का फिल्म के बिंबों में परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया गया है। 'प्रतीक और बिंब' के माध्यम से फिल्मी प्रतीक और बिंबों का साहित्यिक प्रतीक और बिंबों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। और अंत में उपसंहार के उपरांत हिंदी साहित्य और भारतीय

साहित्य पर आधारित हिंदी फिल्मों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। 'परिशिष्ट के अंतर्गत 'दामुल' फिल्म के मूल लेखक तथा पटकथाकार शैवाल के साथ शोधार्थी की बातचीत प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करवाने में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनका मैं सदैव आभारी हूँ। इस कार्य में सबसे पहले मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. सुनील कुमार का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने विषय चयन से लेकर शोध पूर्ण करने तक अपने निष्पक्ष और तर्कपूर्ण सुझावों के द्वारा सहायता की। इसके बाद अपने आदरणीय माता-पिता का मैं नम्र हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया तथा जिनका आभार केवल शब्दों के द्वारा पूर्ण नहीं किया जा सकता। मैं राज्य सभा टीवी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिसके कार्यक्रम 'गुफ्तगू' के लगभग सभी एपिसोड को देखकर मैंने फिल्म के व्यावहारिक और तकनीकी पक्ष को परखने की समझ विकसित की। मैं अपने सभी विद्वान प्राध्यापकों, तर्कशील अग्रजों, स्नेही मित्रों, सहयोगियों और शुभचिंतकों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिनके महत्वपूर्ण सहयोग की बदौलत यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका। मैं आकाश खोब्रागढ़े का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने प्रस्तुत शोध में विशेष सहायता की। 'दामुल' कहानी के लेखक शैवाल जी का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने साहित्य से फिल्म रूपांतरण की बारीकी को समझाने में अपना सहयोग दिया। इसके साथ ही महापंडित राहुल सांकृत्यायन केंद्रीय पुस्तकालय और उसके सभी अधिकारियों, कर्मचारियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिसके शांत और अध्ययन हेतु उपयोगी कक्ष में बैठकर मैंने इस शोध को पूर्णता तक पहुंचाया।

दिनांक- 15/01/2016 **(ज्ञान चन्द्र पाल)**

स्थान: हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
वर्धा, महाराष्ट्र- 442001